८

गोरक्षनाथ (गोरखनाथ)

विक्रम् संवत् की दसवीं शताब्दी में भारतवर्ष के महान गुरु गोरक्षनाथ का आविर्भाव हुआ। शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित महापुरुष भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। भारतवर्ष के कोने कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते हैं। भक्ति-आन्दोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन गोरखनाथ का योगमार्ग ही था। भारतवर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसमें गोरक्षनाथ संबंधी कहानियाँ न पाई जाती हों। इन कहानियों में परस्पर ऐतिहासिक विरोध बहुत अधिक है परन्तु फिर भी इनसे एक बात अत्यन्त स्पष्ट हो जाती है—गोरक्षनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे। उन्होंने जिस धातु को छुआ वही सोना हो गया। दुर्भाग्यवश इस महान् धर्मगुरु के विषय में ऐतिहासिक कही जाने लायक बातें बहुत कम रह गई हैं। दन्तकथाएँ केवल उनके और उनके द्वारा प्रवर्तित योग मार्ग के महत्त्व-प्रचार के अतिरिक्त कोई विशेष प्रकाश नहीं देतीं।

उनके जन्मस्थान का कोई निश्चित पता नहीं चलता। परम्पराएँ अनेक प्रकार के अनुमान को उत्तेजना देती हैं और इसीलिए भिन्न भिन्न अन्वेषकों ने अपनी रुचि के अनुसार भिन्न भिन्न स्थानों को उनका जन्मस्थान मान लिया है। योगि संप्रदाया विष्कृति में उन्हें गोदावरी तीर के किसी चंद्रगिरि में उत्पन्न बताया गया है।[१] नेपाल दरबार लाइब्रेरी में एक परवर्ती काल का गोरक्षसहस्रनाम स्तोत्र नामक छोटा सा ग्रंथ है। उसमें एक श्लोक इस आशय का है कि दक्षिण दिशा में कोई बड़व नामक देश है वहीं महामंत्र के प्रसाद से महाबुद्धिशाली गोरक्षनाथ प्रादुर्भूत हुए थे।[२] संभवतः इस श्लोक में उसी परंपरा की ओर इशारा है जो योगि संप्रदाया विष्कृति में पाई जाती है। श्लोक में का बड़व शायद गोदावरी तीर के प्रदेश का वाचक हो सकता है। क्रुक्स ने[३] एक परम्परा का उल्लेख किया है, जिसे ग्रियर्सन ने भी उद्धृत किया है।[४]

---

१. यो० सं० आ० : पृ० २३

२. अस्ति याम्यां (? पश्चिमायां) दिशिकश्चिद्देशः बड़व संज्ञकः।
तत्राजनि महाबुद्धिर्महामंत्र प्रसादतः।
—कौ० ज्ञा० नि०, भूमिका, पृ० ६४

३. ट्रा० का० : पृ० १५३—४

४. इ० रे० ए० : पृ० ३२८

है जिसमें कहा गया है कि गोरक्षनाथ सत्ययुग में पंजाब के पेशावर में, त्रेता में गोरखपुर में, द्वापर में द्वारका के भी आगे हुरमुज में और कलिकाल में काठियावाड़ की गोरखमढ़ी में प्रादुर्भूत हुए थे। बंगाल में यह विश्वास किया जाता है कि गोरक्षनाथ उसी प्रदेश में उत्पन्न हुए थे। नेपाली परंपराओं से अनुमान होता है कि वे पंजाब से चलकर नेपाल गए थे। गोरखपुर के महन्त ने ब्रिग्स साहब को बताया था कि गुरु गोरखनाथ टिला (झेलम-पंजाब) से गोरखपुर आए थे? नासिक के योगियों का विश्वास है कि वे पहले नेपाल से पंजाब आए थे और बाद में नासिक की ओर गए थे। टिला का प्राधान्य देखकर ब्रिग्स ने अनुमान किया है कि वे संभवतः पंजाब के निवासी रहे होंगे[२]। कच्छ में प्रसिद्धि है कि गोरक्षनाथ के शिष्य धर्मनाथ पेशावर से कच्छ गए थे। ग्रियर्सन ने इन्हें गोरखनाथ का सतीर्थ कहा है[३] परन्तु वस्तुतः धरमनाथ बहुत परवर्ती हैं। ग्रियर्सन ने अन्दाज लगाया है कि गोरक्षनाथ संभवतः पश्चिमी हिमालय के रहने वाले थे। इन्हों ने नेपाल को आर्य अवलोकितेश्वर के प्रभाव से निकालकर शैव बनाया था। ब्रिग्स का अनुमान है कि गोरक्षनाथ पहले वज्रयानी साधक थे, बाद में शैव हुए थे। हम ने मत्स्येंद्रनाथ के प्रसंग में इस मत की और एतत्संबंधी तिब्बती परंपरा की जांच की है। तिब्बती परंपराएं बहुत परवर्ती हैं और विकृतरूप में उपलब्ध हैं; उनको बहुत अधिक निर्भरयोग्य समझना भूल है। मेरा अनुमान है कि गोरक्षनाथ निश्चित रूप से ब्राह्मण जाति में उत्पन्न हुए थे और ब्राह्मण वातावरण में बड़े हुए थे। उनके गुरु मत्स्येंद्रनाथ भी शायद ही कभी बौद्ध साधक रहे हों। मेरे अनुमान का कारण गोरक्षनाथी साधना का मूल सुर है जिसकी चर्चा हम इसी प्रसंग में आगे करने जा रहे हैं।

गोरक्षनाथ के नाम पर बहुत ग्रंथ चलते हैं जिनमें अनेक तो निश्चित रूप से परवर्ती हैं और कई संदेहास्पद हैं। सब मिला कर केवल इतना ही कहा जा सकता है कि गोरक्षनाथ की कुछ पुस्तकें नाना भाव से परिवर्तित परिवर्धित और विकृत होती हुई अब तक चली आ रही हैं। उनमें कुछ-न-कुछ गोरक्षनाथ की वाणी रह जरूर गई है, पर सभी की सभी प्रामाणिक नहीं हैं। इन पुस्तकों पर से कई विद्वानों ने गोरखनाथ का स्थान और कालनिर्णय करने का प्रयत्न किया था, वे सभी प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए हैं। कबीरदास के साथ गोरखनाथ की बातचीत हुई थी, और उस बातचीत का विवरण बताने वाली पुस्तक उपलब्ध है इस पर से एक बार ग्रियर्सन तक ने अनुमान किया था कि गोरखनाथ चौदहवीं शताब्दी के व्यक्ति थे। गुरु नानक के साथ भी उनकी बातचीत का विवरण मिल जाता है। और, और तो और सत्रहवीं शताब्दी के जैन दिगंबर सन्त बनारसीदास के साथ शास्त्रार्थ होने का प्रसंग भी मैंने सुना है। टेसिटरी ने बनारसीदास जैन की एक पुस्तक गोरखनाथ की (?) वचन का भी उल्लेख किया है[४]। इन बातचीतों का ऐतिहासिक मूल्य बहुत

---

१. यो० सं० आ० (अध्याय ४८) से इसी मत का समर्थन होता है।

२ ब्रिग्स: पृ० २२६

३. इ० रे० ए०: पृ० ३२८

४. इ० रे० ए०: १० वां जिल्द, पृ० ८३४

कम है। ज्यादा से ज्यादा इनकी व्याख्या सांप्रदायिक मतैक्य प्रतिपादन के रूप में ही की जा सकती है। या फिर आध्यात्मिक रूप में इसकी व्याख्या यों की जा सकती है कि परवर्ती सन्त ने ध्यान बल से पूर्ववर्ती सन्त के उपदिष्ट मार्ग से अपने अनुभवों की तुलना की है परन्तु इसपर से गोरखनाथ का समय निकालना निष्फल प्रयास है। कबीरदास के साथ तो मुहम्मद साहब की बातचीत का ब्यौरा भी उपलभ्य है तो क्या इसपर से यह अनुमान किया जा सकता है कि कबीरदास और हजरत मुहम्मद समकालीन थे? वस्तुतः गोरखनाथ को दसवीं शताब्दी का परवर्ती नहीं माना जा सकता मत्स्येन्द्रनाथ के प्रसंग में हमने इसका निर्णय कर लिया है।

गोरखनाथ और उनके द्वारा प्रभावित योगमार्गीय ग्रंथों के अवलोकन से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि गोरखनाथ ने योगमार्ग को एक बहुत ही व्यवस्थित रूप दिया है। उन्होंने शैवप्रत्यभिज्ञादर्शन के सिद्धान्तों के आधार पर बहुधाविस्तृत कायायोग के साधनों को व्यवस्थित किया है, आत्मानुभूति और शैव परंपरा के सामंजस्य से चक्रों की संख्या नियत की, उन दिनों अत्यन्त प्रचलित वज्रयानी साधना के पारिभाषिक शब्दों के सांवृतिक अर्थ को बलपूर्वक पारमार्थिक रूप दिया और अब्राह्मण उद्गम से उद्भूत और संपूर्ण ब्रह्मण विरोधी साधनमार्ग को इस प्रकार संस्कृत किया कि उसका रूढ़ि विरोधी रूप ज्यों का त्यों बना रहा परन्तु उसकी अशिक्षा जन्य प्रमाद पूर्ण रूढ़ियाँ परिष्कृत हो गईं। उन्होंने लोकभाषा को भी अपने उपदेशों का माध्यम बनाया। यद्यपि उपलभ्य सामग्री से यह निर्णय करना बड़ा कठिन है कि उनके नाम पर चलने वाली लोकभाषा की पुस्तकों में कौन-सी प्रामाणिक है और उनकी भाषा का विशुद्ध रूप क्या है तथापि इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने अपने उपदेश लोकभाषा में प्रचारित किए थे। कभी कभी इन पुस्तकों की भाषा पर से भी उनके काल का निर्णय करने का प्रयास किया गया है। स्पष्ट है कि यह प्रयास भी निष्फल है।

गोरखनाथ की लिखी हुई कही जाने वाली निम्नलिखित संस्कृत पुस्तकें मिलती हैं। इनमें से कई को मैंने स्वयं नहीं देखा है, भिन्न भिन्न ग्रंथ सूचियों और आलोचनात्मक अध्ययनों से संग्रह भर कर लिया है। जिनको देखा है उनका एक संक्षिप्त विवरण भी दे दिया है। अनदेखी पुस्तकों के नाम जिस मूल से प्राप्त हुए हैं उनका उल्लेख कोष्ठक में पुस्तक के सामने कर दिया गया है।

१. **अमनस्क**—एक प्रति बड़ौदा लाइब्रेरी में है। गो० सि० सं० में बहुत से वचन उद्धृत हैं।

२. **अमरौघशासनम्**—श्री मन्महामाहेश्वराचार्य श्री सिद्ध गोरक्षनाथ विरचितम्। यह पुस्तक काश्मीर संस्कृत ग्रंथावलि (ग्रंथाङ्क २०) में प्रकाशित हुई है। महामहोपाध्याय पं० मुकुन्दराम शास्त्री ने इसका संपादन किया है। यद्यपि यह

पुस्तक सन् ([illegible] ई०) में छप गयी थी, परन्तु आश्चर्य यह है कि गोरखनाथी साहित्य के अध्ययन करने वालों ने इसकी कोई चर्चा नहीं की है। यह पुस्तक बहुत ही महत्वपूर्ण है इसमें गोरखनाथ के सिद्धान्त का सूत्ररूप में संकलन है। यह पुस्तक हठयोग की साधना शैवागमों से संबंध और जोड़ती है। आगे इसके प्रतिपादित सिद्धान्तों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

३. **अवधूतगीता** — गो० सि० सं० पृ० ७५ में गोरखकृता कही गई है।

४. **गोरक्षकल्प** (फर्कुहर, ब्रिग्स)

५. **गोरक्षकौमुदी** (फर्कुहर, ब्रिग्स)

६. **गोरक्षगीता** (फर्कुहर)

७. **गोरक्षचिकित्सा** (आफ्रेक्ट)

८. **गोरक्षपञ्चय** (ब्रिग्स)

९. **गोरक्ष पद्धति** — दो सौ संस्कृत श्लोकों का संग्रह। बंबई से महीधर शर्मा की हिंदी टीका समेत छपी है। इसका प्रथम शतक गोरक्षशतक नाम से कई बार छप चुका है। इसी का नाम गोरक्षज्ञान भी है। दूसरे शतक का नाम योगशास्त्र भी बताया गया है।

१०. **गोरक्षशतक** — ऊपर नं० ७ का प्रथम शतक। इसकी एक प्रति पूना से छपी मिली है। ब्रिग्स ने अपनी पुस्तक में इसको रोमन अक्षरों में छापा है और उसका अंग्रेजी अनुवाद भी दिया है। इनके मत से यह पुस्तक गोरखनाथ की सच्ची रचना जान पड़ती है। डाक्टर प्रबोधचंद्र बागची ने कौलज्ञाननिर्णय की भूमिका में नेपाल दरबार लाइब्रेरी के एक हस्तलिखित ग्रंथ का ब्योरा दिया है। नेपाल वाली पुस्तक छपी हुई पुस्तकों से भिन्न नहीं है।

इस पर दो टीकाएं हुई हैं। एक शंकर पंडित की और दूसरी मथुरानाथ शुक्ल की। दूसरी टीका का नाम टिप्पण है (ब्रिग्स)। इसी पुस्तक के दो और नाम भी प्रचलित हैं, (१) ज्ञानप्रकाश और (२) ज्ञानप्रकाश शतक (आफ्रेक्ट)।

११. **गोरक्षशास्त्र** — दे० नं० ९

१२. **गोरक्ष संहिता** — प्रायः सभी सूचियों में इस पुस्तक का नाम आता है। पं० प्रसन्नकुमार कविरत्न ने इस पुस्तक को सं० १८९० में छपाया था। परन्तु अब यह पुस्तक खोजे नहीं मिलती। डा० बागची ने कौलज्ञाननिर्णय की भूमिका में नेपाल दरबार लाइब्रेरी में पाई गई प्रति में से कुछ अंश उद्धृत किया है पुस्तक के कितने ही श्लोक हू-बहू मत्स्येन्द्रनाथ के अकुलवीरतंत्र नामक

ग्रंथ से मिल जाते हैं और दोनों का प्रतिपादन भी एक ही है। इस प्रकार यह पुस्तक काफी महत्त्वपूर्ण है।

१३. चतुरशीत्यासन (आफ्रेख्ट)

१४. ज्ञानप्रकाशशतक (दे० नं० १०)

१५. ज्ञानशतक (दे० १०)

१६. ज्ञानामृतयोग (आफ्रेख्ट)

१७. नाड़ीज्ञानप्रदीपिका (आफ्रेख्ट)

१८. महार्थमंजरी—यह पुस्तक काश्मीर संस्कृत ग्रंथावलि (नं० ११) में छपी है। यह किसी महेश्वरानंद नाथ की लिखी हुई है। काश्मीरी परंपरा के अनुसार ये गोरक्षनाथ ही हैं। पुस्तक म० म० पं० मुकुन्दराम शास्त्री ने संपादित की है। इस पर भी लिखा है—'गोरक्षापरपर्याय श्रीमन्महेश्वरानंदाचार्य विरचिता'। पुस्तक की भाषा काश्मीरी अपभ्रंश है परन्तु ग्रंथकार ने स्वयं परिमल नामक टीका लिखी हैं। विषय ३६ तत्त्वों की व्याख्या है। नाना दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है।

१९. योगचिन्तामणि (आफ्रेख्ट)

२०. योगमार्तण्ड (,,)

२१. योगबीज—गो. सि. सं. में अनेक वचन उद्धृत हैं

२२. योगशास्त्र (दे० नं० ७)

२३. योगसिद्धासनपद्धति— आफ्रेख्ट

२४. विवेकमार्तण्ड—इस पुस्तक के कुछ वचन गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह में हैं। इसके श्लोक गोरक्षशतक में पाए जाते हैं। इसलिये यद्यपि इसे रामेश्वर भट्ट का बताया गया है तो भी आफ्रेख्ट के अनुसार इसे गोरक्षकृत ही मानना उचित जान पड़ता है।

२५. श्रीनाथसूत्र—गो. सि. सं. में कुछ वचन हैं।

२६. सिद्धसिद्धान्त पद्धति—ब्रिग्स ने नित्यानंदरचित कहा है पर अन्य सबने गोरक्षनाथ रचित बताया है। गोरक्षसिद्धान्त संग्रह में भी इसे नित्यनाथ विरचिता कहा गया है (पृ० ११)।

२७. हठयोग—(आफ्रेख्ट)

२८. हठ संहिता—(,,)

इन पुस्तकों में अधिकांश के कर्ता स्वयं गोरक्षनाथ नहीं थे। साधारणतः उनके उपदेशों को नये-नये रूप में वचनबद्ध किया गया है। परन्तु १, २, ९, १२ और २६ अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें भी १ को मैंने देखा नहीं, केवल गोरक्षसिद्धान्त में संगृहीत वचनों से उसका परिचय पासका हूँ। सिद्धसिद्धान्तपद्धति को संक्षिप्त करके काशी के

बलभद्र पंडित ने एक छोटी सी पुस्तक लिखी थी जिसका नाम है सिद्ध सिद्धान्त संग्रह। इस में तथा गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह में सिद्ध सिद्धान्त पद्धति के अनेक श्लोक उद्धृत हैं। इन सबके आधार पर गोरक्षनाथ के मत का प्रतिपादन किया जा सकता है। इस विषय में गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह बहुत ही उपयोगी पुस्तक है।

इन पुस्तकों के अतिरिक्त हिन्दी में भी गोरक्षनाथ की कई पुस्तकें पाई जाती हैं। इनका संपादन बड़े परिश्रम और बड़ी योग्यता के साथ स्वर्गीय डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने किया है। यह ग्रंथ गोरख बानी नाम से हिंदी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित हुआ है। दूसरा भाग अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ और अत्यन्त दुःख की बात है कि उसके प्रकाशित होने के पूर्व ही मेधावी ग्रंथकार ने इह लोक त्याग दिया। डा० बड़थ्वाल की खोज से निम्नलिखित चालीस पुस्तकों का पता चला है जिन्हें गोरख नाथ-रचित बताया जाता है;

१. सबदी	२१. नवग्रह
२ पद.	२२. नवरात्र
३ सिष्या दरसन	२३. अष्ट पारछ्या
४. प्राण संकली	२४. रहरास
५. नरवै बोध.	२५. ग्यान माला
६. आतम बोध (१)	२६ आत्मबोध (२)
७. अभैमात्रा जोग	२७. व्रत
८. पंद्रहतिथि	२७. निरंजनपुराण
९. सप्त वार	२९. गोरखवचन
१०. मछीन्द्र गोरख बोध	३०. इन्द्री देवता
११. रोमावली	३१. मूल गभावली
१२. ग्यान तिलक	३२. खाणी बाणी
१३. ग्यान चौंतीसा	३३. गोरख सत
१४. पंचमात्रा	३४. अष्ट मुद्रा
१५. गोरख गणेश गोष्टी	३५. चौबीस सिधि
१६. गोरखदत्त गोष्टी (ग्यान दीप बोध)	३६. षडक्षरी
१७. महादेव गोरखगुष्टि	३७ पंचअग्नि
१८. सिष्ट पुरान	३८. अष्टचक्र
१९. दयाबोध	३९. अबलि सिलूक
२०. जाती भौरावली (आदि गोरख)	४०. काफिर बोध

डा० बड़थ्वाल ने अनेक प्रतियों की जांच कर के इन में प्रथम चौदह को तो निस्सन्दिग्ध रूप से प्राचीन माना क्योंकि इनका उल्लेख प्रायः सब में मिला। ग्यान चौंतीसा समय पर न मिल सकने के कारण इस संग्रह में प्रकाशित नहीं कराया जा सका परन्तु बाकी तेरह गोरखनाथ की बानी समझकर पुस्तक में सम्मिलित हुए हैं। १५

से १९ तक की प्रतियों को एक प्रति में संतदास निरंजनी की रचना माना गया है। इसलिये संदेहास्पद समझकर संपादक ने उन्हें परिशिष्ट क में रखा है। बाकी में कुछ गोरखनाथ की स्तुति हैं, कुछ अन्य ग्रंथकर्ता के नाम भी हैं, काफिर बोध कबीर दास के नाम भी है इसलिये डा० बड़थ्वाल ने इस संग्रह में उन्हें स्थान नहीं दिया। केवल परिशिष्ट ख में सप्तवार, नवग्रह, व्रत, पंच अग्नि, अष्ट मुद्रा, चौबीस सिद्धि, बत्तीस लक्षण, अष्ट चक्र, रहरासि को स्थान दिया है। अवलि सिलूक और काफिर बोध रतननाथ के लिखे हुए हैं। डा० बड़थ्वाल इन प्रतियों की आलोचना करने के बाद इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि 'सबदी' गोरख की सबसे प्रामाणिक रचना जान पड़ती है। परन्तु वह उतनी परिचित नहीं जितनी गोरखबोध[1]। गोरखबोध की सबसे पहली छपी हुई एक खण्डित प्रति कार्माइकल लाइब्रेरी, काशी में है जो सन् १९११ में बांस का फाटक बनारस से छपी थी। बाद में इसे जयपुर पुस्तकालय से संग्रह करके डा० मोहनसिंह ने अंग्रेजी अनुवाद के साथ अपनी पुस्तक में प्रकाशित की है। डा० मोहनसिंह इस पुस्तक में प्रतिपादित सिद्धान्तों को बहुत प्रामाणिक मानते हैं परन्तु मत्स्येंद्रनाथ के उपलब्ध ग्रंथों के आलोक में डाक्टर मोहनसिंह का मत बहुत ग्रहणीय नहीं लगता। डाक्टर बड़थ्वाल ने इन पुस्तकों के रचयिता के बारे में विशेष रूप से लिखने का वादा किया था पर महाकाल ने उसे पूरा नहीं होने दिया। परन्तु अपने भावी मत का आभास उन्होंने निम्नलिखित शब्दों में दे रखा है: 'नाथ-परंपरा में इनके कर्ता प्रसिद्ध गोरखनाथ से भिन्न नहीं समझे जाते। मैं अधिक संभव समझता हूँ कि गोरखनाथ विक्रम की ११ वीं शती में हुए। ये रचनाएँ जैसी हमें उपलब्ध हो रही हैं ठीक वैसी ही उस समय की हैं, यह नहीं कहा जा सकता। परन्तु इसमें भी प्राचीनता के प्रमाण विद्यमान हैं, जिससे कहा जा सकता है कि संभवतः इनका मूलोद्भव ग्यारहवीं शती ही में हुआ हो।'[2]

आगे इस उपलब्ध सामग्री के आधार पर हम गोरखनाथ के उपदेशों का सार संकलन कर रहे हैं।[3]

---

१. गोरखबानी, भूमिका पृ० १८-१९

२. गोरखबानी, भूमिका पृ० २०

३. उपरिलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त शिवानंद सरस्वती का योगचिंतामणि, रामेश्वर भट्ट का विवेकमार्तंड योग, सुन्दरदेव की हठसंकेतचंद्रिका, स्वात्माराम की हठयोगप्रदीपिका और उस पर रामानंद तीर्थ की टीका और उमापति का टिप्पण, ब्रह्मानंद की ज्योत्स्ना, चण्ड कापालिक की हठरत्नावली, शिव का हठयोगधीराय और उस पर रामानंद तीर्थ की टीका, वामदेव का हठयोगविवेक, सदानंद का ज्ञानामृत टिप्पण, कबडारभैरव का ज्ञानयोगखंड, सुन्दरदेव की संकेतचंद्रिका, घेरण्डसंहिता, शिवसंहिता, मिरअन पुराण इत्यादि ग्रंथ इस मार्ग के सिद्धान्त और साधनपद्धति के अध्ययन में सहाय हैं।